सतगुरुवार भोग और वतन से प्राप्त अव्यक्त सन्देश - गुल्जार दादी जी

आज बहुत समय के बाद बाबा के पास इस रीति से जाना हुआ। बाबा ने सामने से ही देखते हुए बाहें पसारी और हम उस बाहों में समा गये। बाबा, काफी समय हमें बाहों के झूले में झुलाते रहे। उसके बाद बाबा ने कहा, बच्ची आज बच्चों ने आपको क्या कहा है? मैंने कहा बाबा, जो बच्चों ने कहा वो तो आपने भी सुन लिया होगा। बाबा ने कहा मैंने तो सुना लेकिन तुम क्या सन्देश लाई हो? मैंने कहा बाबा, आज 75 वर्ष की सेरीमनी की सेवा का पहला दिन है। वो भी दिल्ली में आरम्भ हुआ है। बाबा मुस्कराया और कहा बच्चों की मेहनत और मोहब्बत दोनों तरफ बाबा देख रहा था कि किसकी जीत होती है। बाबा ने कहा मैंने देखा बच्चों की मोहब्बत और मेहनत साथ-साथ है। बाबा के पास बच्चों का संकल्प जो था कि बाबा क्या कहता है वो तो बाबा के पास पहले ही पहुँच जाता है। बाबा ने कहा कि बाबा खुश है, सेवा का आरम्भ फिर 75 वर्ष की समाप्ति का। यह बड़ी बात है कि 75 वर्ष बाबा का कार्य बच्चों ने निर्विघ्न चलाया है। बाबा की सकाश हर समय बच्चों के साथ है। मैंने कहा बाबा, मैं ओ.आर.सी. (ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर) से आई हूँ। बाबा ने कहा मैं तो कल से ही देख रहा हूँ कि सभी बच्चों में बहुत उमंग है क्योंकि शुरूआत भी सेवा की दिल्ली से हुई। यह प्लैटिनम जुबली का फंक्शन भी दिल्ली में हो रहा है। बाबा ने कहा, बाबा को भी देखके खुशी होती है कि बच्चों ने दृढ़ संकल्प किया कि करना ही है। तो बच्चों का संकल्प और बाबा की मदद क्या बड़ी बात है। सबको बाबा देख रहा है कि सेवा की खुशी भी और बापदादा के मोहब्बत की खुशी भी है। सेवा करते हुए बच्चों को यही याद रहता है कि बस अभी तो बाबा को प्रत्यक्ष करना ही है। बाबा ने कहा देखो बच्ची लोग कहते हैं कि ब्रह्माकुमारियाँ अच्छा काम करती है। ब्रह्माकुमारियाँ-ब्रह्माकुमारियाँ कहते हैं लेकिन भगवान आ गया है, भगवान कर रहा है ये अभी प्रसिद्ध नहीं है। भगवान इनसे करा रहा है यह कहते हैं लेकिन भगवान आ गया है ये नहीं है। वृद्धि हो रही है, अनुभव कर भी रहे हैं लेकिन जैसे गीत गाते हो कि हमारा बाबा आ गया है ऐसे सबके मुख से निकले अभी भगवान आ गया। मैंने कहा बाबा वो भी हो जायेगा। पहले एन्टी थे अभी मानते हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं। यह भी अनुभव करते हैं कि ब्रह्माकुमारियों के बगैर शान्ति का अनुभव कोई नहीं करा सकता। बाबा ने कहा अभी बाबा देखने चाहता है कि भगवान आ गया है, इन्हों को पढ़ाने वाला भगवान है - अभी यह आवाज निकलना चाहिए। मैंने कहा वो ग्रुप भी निकलेगा, टीवी ग्रुप शुरू हुआ है। बाबा ने कहा हाँ वो ग्रुप तैयार करो जो अथॉरिटी वाला हो वो कहे तो समझे कि हाँ यह कहता है तो कुछ है। अभी ब्रह्माकुमारियों को देखें - इस रीति से आते हैं। अभी यह रहा हुआ है जो आप बच्चों को करना है।

फिर हमने कहा बाबा आज तो सभी ओ.आर.सी. वालों ने, सभी निमित्त ने पुरुषार्थ करके राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री को बुलाया है। बाबा ने कहा मैं खुश हूँ, कि इतनी कोशिश की है और सफलता मिली है लेकिन सम्पूर्ण सफलता तब होगी जब सबके मुख से निकले हमारा बाबा आ गया है। पूरा वर्सा लें वा कम लें, ये तो फर्क होगा लेकिन जब यह मुख से निकले तब बाबा कहेगा समाप्ति नजदीक हो जायेगी।

मैंने कहा बाबा ओ आर सी वालों ने एक-एक ने याद दी है। सभी की याद मैं लाई हूँ। बाबा ने कहा देखो जनक बच्ची को इमर्ज करता हूँ। जैसे जानकी दादी को इमर्ज किया तो साथ में दीदी-दादी, चन्द्रमणी दादी सभी दादियाँ आ गई। जो दादियों के कनेक्शन में रहते हैं वो भी इमर्ज हो गये। तो ग्रुप बन गया जैसे साकार में दादियाँ मिलती थी ना ऐसे वतन में दादियों का झुण्ड इकट्ठा हो गया। सभी एक-दो कह रहे थे अरे, आप भी आये! फिर दादी ने कहा बाबा हम तो आ गये, हमारे भाई जो हैं उन्हों को भी तो बुलाओ ना। जब यह कहा तो हमारे मुख्य भाई भी इमर्ज हो गये। बाबा को देखकर सभी एक दो में मिलने लगे। बाबा ने कहा आज आप भले एक दो से मिलो। वो रौनक वतन की बड़ी अच्छी हो गई थी।

मैंने कहा बाबा ओ आर सी के लिए क्या कहेंगे। बाबा ने कहा ओ.आर.सी. के भाई-बहनों से बाबा का प्यार है। बाबा ने देखा है कि सेवा का उमंग भी है और दिनचर्या भी कायदे प्रमाण चल रही है। भले सेवा बहुत है लेकिन सेवा के कारण दिनचर्या बदल जाये ऐसा नहीं है। पुरुषार्थ भी अच्छा और सेवा भी अच्छी। फिर बाबा ने बाहें बड़ी करके पहले ग्रुप के निमित्त मुख्य को भाकी में लिया। सभी को बाबा ने कहा जिस सिक व प्रेम से याद किया तो बाबा भी

आपको बहुत सिक व प्यार दे रहा है। दिलाराम दिल का प्यार दे रहा है। यह दिल का प्यार आपका है और सदा कायम रहेगा। पहले दादियों को फिर बड़ी बहनों के ग्रुप को बाहों में लिया फिर भाईयों के ग्रुप को भी लिया। बृजमोहन भाई को बाबा ने बहुत दृष्टि दी और छाती से लगाया। बाबा ने कहा हिम्मत है इसमें, हिम्मत के कारण हिम्मते बच्चे मददे बच्चे हो ही जाता है। इसने हिम्मत दिखाई इसलिए प्रत्यक्षफल हो रहा है। बाबा ने यही कहा सदा हिम्मत और मदद साथ रहेंगे और सफलता मिलती रहेगी।

मैंने कहा कुमारियाँ रह गई। कुमारियों का झुण्ड बड़ा था, उनके ग्रुप को भी बाबा ने बाहों में समाया । कुमारियाँ तो बाबा के प्यार में बिल्कुल लवलीन हो गई। बिल्कुल खो गई, बाबा बोल रहा है उनको कुछ खबर नहीं था। थोड़ा टाइम तो बाबा ने समाके रखा फिर बाबा ने कहा बच्ची, कहाँ आई हो तो थोड़ा अटेन्शन में आई। बाबा ने कहा आपने याद किया न इसलिए बाबा ने आपको वतन में बुलाया है। कुमारियों की तो लवलीन अवस्था से नीचे आने की रुचि ही नहीं थी। बाबा ने कहा अभी सभी सामने बैठो। फिर बाबा ने कहा, बाबा अभी आपको एक्स्ट्रा बात बताता है जो आपको प्रैक्टिकल करना है। देखो अमृतवेले तो उठते हो लेकिन हरेक की अवस्था अपनी-अपनी होती है। जैसे मिलन मनाते हो वैसे मिलन मनाते रहो लेकिन मन की ड्रिल भी करो। जैसे यहाँ की दुनिया में कहते हैं ड्रिल करना जरूरी है। फिर भी जैसे बाबा के तीन रूप है ऐसे हर बच्चे के भी तीन रूप हैं। हर बच्चे के ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता यह तीन रूप हैं। इन तीनों रूपों की ड्रिल करो और उसका अनुभव करो। जो रूप आप चाहों उस रूप का अनुभव करो। जैसे मन्सा सेवा पर अटेन्शन है ऐसे स्व प्रति यह मन्सा ड्रिल करो यानि भिन्न-भिन्न रूप का अनुभव करो। तो आपका मन एकदम कन्ट्रोलिंग पॉवर और रूलिंग पॉवर में आ जायेगा। फिर आप अन्त में सरकमस्टांस अनुसार जिस स्वरूप की आवश्यकता होगी तो आप स्वरूप बदल उस स्वरूप में स्थित हो जायेंगे। जिस स्वरूप का अनुभव कराने चाहो करा सकेंगे।

फिर बाबा सभी को पहाड़ी पर ले चला वहाँ चारों ओर दु:ख और अशान्ति के फेस दिखाई दे रहे थे। बाबा ने कहा एक-एक अलग-अलग मनसा सेवा तो करते हो लेकिन अभी संगठित रूप में भी मनसा सेवा करनी पड़ेगी। बीच-बीच में जहाँ भी संगठन होता वहाँ मनसा सेवा की भी ड्रिल करो क्योंकि संगठित शक्ति भी उन्हों को चाहिए। इसलिए बाबा यह अभ्यास करा रहा है। फिर सभी पहाड़ी से नीचे आ गये। बाबा ने कहा दिल्ली और ओ आर सी वालों को इमर्ज करके काम दे रहा है मनसा सेवा संगठित रूप में करो तो दुनिया को वायब्रेशन पहुंचे और यह अनुभव करें कि हमारा बाबा आ गया। अगर हम वर्सा नहीं लेंगे तो वंचित रह जायेंगे। हमको वर्सा लेना ही है यह प्रेरणा उनको मिले।

फिर दीदी-दादी जो मिली वो आपस में हालचाल पूछ रही थी। सभी ने लेनदेन की उसके बाद बाबा के पास आये। तो बाबा ने कहा वास्तव में यह 75 वर्ष वाले, इसमें ज्यादा एडवान्स पार्टी वाले हैं। फिर हमने सब यहाँ का समाचार सुनाया कि कितनी पुलिस ओ आर सी में आ गई है! बाबा ने कहा जैसे यह पुलिस ऑर्डर मान के हाजिर हो जाती है। ऐसे ही आप भी संगठन में शक्ति भरो जो ऑर्डर करो फरिश्ता रूप तो फरिश्ता रूप में स्थित हो जाओ, देवता रूप तो देवता रूप में स्थित हो जाओ। फिर उसका वायुमण्डल पर प्रभाव पड़ेगा।

फिर बाबा ने हरेक को वतन का शूबीरस पिलाया। मुख्य निमित्त को बाहों में लेकर शूबीरस पिलाया। बाबा ने कहा हरेक दिल से कर रहा है, दिल का आवाज बाबा तक पहुंचा इसलिए बाबा ने सभी को बिठा के शूबीरस पिलाया। अभी इसका रिटर्न देना पड़ेगा कि जो भी है वो समाप्त और सफलता मेरी साथी है। सफलता का वरदान बाबा ने सबको दिया है, अब इस वरदान को कार्य में लाना है। इसे कभी भी भूलना नहीं है। सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसे बाबा सभी से मिला। बहनें तो आपस में ही मिल रही थी। फिर लास्ट में बाबा से सभी अमृत पीने बाबा के पास आई। बाबा ने सभी को कहा कि तुम लोगों को बाबा भी याद करता है और सभी चारों ओर की ब्राह्मण फैमिली भी याद करती है। जब भी कोई बात होती है तो कोई दादी को याद करता, कोई दीदी को याद करता कि दादी ऐसे करती थी, दीदी ऐसे करती थी। फिर हमने बाबा को भोग खिलाया। आज 75 तरह का भोग था। बाबा ने दादियों को कहा जो सभी आये हैं उनको भोग खिलाओ। फिर बाबा ने सभी को मर्ज कर दिया और मैं भी वापस आ गई।

ओम् शान्ति।